दाम्पत्य जीवन में सप्तमेश की स्थिति के फल

– एक शोध अध्ययन

– अनिल शर्मा , गुड़गाँव

लगभग सभी ज्योतिष ग्रन्थों के अनुसार शुभ भाव के स्वामी शुभ भावों में स्थित होने पर शुभ फल करते हैं। यहाँ शुभ भाव से अभिप्राय है केन्द्र व त्रिकोण के भाव। दाम्पत्य जीवन पर सप्तमेश की स्थिति का प्रभाव सबसे अधिक पड़ता हैं। यदि सप्तमेश केन्द्र त्रिकोण में स्थित हो तो दाम्पत्य जीवन सुखमय तथा सप्तमेश त्रिकभावों में होने पर वैवाहिक जीवन दुःखमय होना चाहिये। यद्यपि सप्तम भाव पर शुभाशुभ प्रभाव तथा विवाह कारक शुक्र/गुरू की शुभाशुभ स्थिति का भी प्रभाव पड़ेगा किन्तु सप्तमेश से काफी कम होगा।

जाया भाव फलं वक्ष्ये क्षृणु त्वं द्विजसतम्।

जायाधिपे स्वभे स्वोच्चें स्त्रीसुखं पूर्णमादिशेत्।।

कलत्रयो बिना स्वर्क्षं व्ययषष्ठाष्टमस्थितः।

रोगिणों कुरूते नारीं तथा तुमादिकं बिना।

बृहत्पाराशर होरा शास्त्र

अर्थात पाराशर जी के अनुसार यदि सप्तमेश अपनी राशि में, अपनी उच्च राशि में तो जातक को पुर्ण दाम्पत्य सुख प्राप्त होगा। किन्तु यदि सप्तमेश व्यय, षष्ठ या अष्टम भाव में स्थित हो तो जातक का जीवन साथी रोगी होगा अथवा वैवाहिक जीवन कष्टप्रद होगा।

लग्न भाव सप्तम से सप्तम होने के कारण दाम्पत्य जीवन का वैकल्पिक भाव बनता है। इसलिये जन्म कुंड़ली में लग्नेश की स्थिति का

प्रभाव भी वैवाहिक जीवन को प्रभावित ग्रन्थों में सफल वैवाहिक जीवन के सैकड़ों योगों का उल्लेख मिलता है, इसी प्रकार असफल वैवाहिक जीवन पर अनेकानेक योगों का वर्णन किया गया है किन्तु मुख्य रूप से सभी का आधार दाम्पत्य या सप्तम भाव, सप्तममेश व विवाह कारक ग्रहों की शुभाशुभ स्थिति व उन पर अन्य ग्रहों का शुभाशुभ प्रभाव ही पाया जाता है। वास्तव में यह प्रभाव हमें लग्न, चन्द्र, सूर्य तथा नवमांश कुंड़ली में देखकर किसी उचित निर्णय पर पहुँचना चाहिये। इसके साथ ही दशा/अन्तर्दशा व गोचर का प्रभाव देखना भी आवश्यक है। दाम्पत्य जीवन की सफलता/असफलता स्त्री –पुरूष दोनों की कुंड़लियों पर आधारित होती है तथा उनमें विरोधाभास की स्थिति भी सम्भव है। इस प्रकार अनेक बिन्दुओं पर विचार करके ही अन्तिम निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है। उपरोक्त सीमाओं के संदर्भ में ही शोध के परिणामों का आकलन करना आवश्यक है।

शोध प्रक्रिया

- इस शोध के लिये हमने 1013 कुंडलियों का अघ्ययन किया।
- 552 कुंड़लियाँ सफल दाम्पत्य जीवन तथा शेष 461 कुंड़लियाँ असफल दाम्पत्य जीवन से सम्बन्धित थी।
- लग्न राशि को आधार बनाकर हमने सभी ग्रहों की स्थिति देखी किन्तु इस शोध के लिये हमने सप्तमेश व लग्नेश की स्थिति का ही अवलोकन किया।
- सफल वैवाहिक जीवन व असफल वैवाहिक जीवन की कुंडलियों का अलग– अलग अघ्ययन किया तथा उनमें सप्तमेश व लग्नेश की स्थिति भावानुसार देखी।
- इस प्रकार लग्नों मे सफल तथा असफल दाम्पत्य जीवन में सप्तमेश व लग्नेश स्थिति प्राप्त की।

- यद्यपि सभी 12 लग्नों के लिये भावानुसार आंकड़े उपलब्ध हैं। किन्तु उनमें से प्रथम तीन भावों को ही प्राथमिकता दी गई जिनमें अधिक संख्या अथवा प्रतिशत मिली।
- यानि प्रथम तीन भाव सफल विवाह तथा प्रथम तीन भाव असफल विवाह के, जिनमें लग्नेश /सप्तमेश स्थित मिले।
- इन सफल / असफल विवाह की 1013 कुंड़लियों मे हमने मंगलीक दोष का भी अध्ययन किया।

सारिणी – 1

सफल विवाह में सप्तमेश की स्थिति एवं शुभ फल

लग्न	उच्चतम भाव	प्रतिशत	उच्चतर	प्रतिशत	उच्च भाव	प्रतिशत	कुल जातक 552
मेष	10	18%	2	11%	8	11%	40%
वृष	11	21%	5	12%	7	11%	44%
मिथुन	4	13%	7	13%	12	12%	38%
कर्क	4	16%	5	11%	12	9%	36%
सिंह	3	16%	1	13%	12	11%	40%
कन्या	12	16%	6	14%	1	13%	43%
तुला	11	17%	4	14%	1	11%	42%
वृश्चिक	12	22%	9	17%	10	15%	54%
धनु	8	16%	12	14%	10	14%	44%
मकर	8	14%	3	14%	10	14%	42%
कुंभ	1	18%	6	12%	11	12%	42%
मीन	7	15%	8	15%	3	12%	42%
कुल जातक 507 ÷ 12 = 42%							

बारह लग्नों में प्रत्येक लग्न में तीन भावों में सप्तमेश की उच्चतम, उच्चतर तथा उच्च स्थिति का देखा। बारह लग्न x 3 स्थितियां कुल 36 भाव (स्थान हुआ)। इन 36 स्थानो में से कुछ स्थान ऐसे है जिन्हें हम अशुभ भाव कहते है जैसे (6,8,12) उन बारह स्थानों मे बैठकर सप्तमेश ने अच्छे फल दिए है। लेकिन शास्त्रों की बात माने तो इनका विवाह असफल होना चाहिए था। किन्तु 12 ÷ 36×100 = 33.33% प्रतिशत लोगों की कुंड़लियों में सप्तमेश दुःस्थान होकर भी शुभ फल दे रहा है।

सारिणी – 2

अब उसी प्रकार से दूसरी श्रेणी अर्थात असफल विवाह की बात करते हैं। आजतक हमने ये जाना था कि जिनकी कुंड़लियों मे सप्तमेश केन्द्र या त्रिकोण मे होता है तो शुभ फल देता है। किन्तु परिणाम यहां भी विपरीत मिले आइये देखें एक दृष्टि मे इस चार्ट में हमने असफल विवाह वाले

असफल विवाह में सप्तमेश की स्थिति

लग्न	उच्चतम भाव विकृष्ट	प्रतिशत	उच्चतर अति अशुभ	प्रतिशत	उच्च भाव अशुभ	प्रतिशत	कुल जातक 461%
मेष	5	18%	4	16%	11	11%	45%
वृष	5	20%	6	20%	10	11%	51%
मिथुन	7	19%	8	19%	9	13%	51%
कर्क	4	33%	5	33%	3	23%	89%
सिंह	2	25%	3	25%	4	25%	75%
कन्या	5	18%	6	18%	3	16%	52%
तुला	2	13%	10	12%	9	11%	36%
वृश्चिक	8	17%	12	14%	10	12%	43%
धनु	10	16%	9	14%	11	14%	44%
मकर	6	29%	2	18%	9	12%	59%
कुंभ	1	20%	8	19%	9	17%	54%
मीन	7	24%	6	24%	5	15%	63%
कुल जातक 662 ÷ 12 = 55 %							

जातकों को तीन हिस्से में बाँटा। किस जातक को सप्तमेश ने कहाँ बैठकर सबसे ज्यादा बुरे फल दिए। इसे देखने के लिए हमने तीन प्रकार में 1निकृष्ट 2 अति अशुभ 3 अशुभ इन्हे रखा। यहां भी बारह लग्नों मे तीन–तीन भावों में सप्तमेश का फल जाना। शुभ स्थानों मे सप्तमेश ने 36 में से 20 बार स्थित होकर अशुभ फल दिया। ये 20 स्थान केन्द्र या त्रिकोण के है। 55.55% जातकों की कुंड़ली में सप्तमेश के केन्द्र या त्रिकोण में स्थित होने से भी विवाह असफल रहा।

निष्कर्ष :–

1 मेष लग्न में सप्तमेश यदि 10, 2, 8 भावों मे स्थित होगा तो विवाह सफल होगा। यदि 5, 4, 8 भावों मे होगा तो विवाह असफल होगा।

2 तुला लग्न में सप्तमेश यदि 12, 11, 4, 1 भावों में होगा तो विवाह सफल होगा। यदि 2, 10, 9 भावों मे होगा तो विवाह असफल होगा।

3 मकर लग्न मे सप्तमेश यदि 8, 3, 10 भावों मे होगा तो विवाह सफल होगा। यदि 6, 2, 9 भावों मे होगा तो विवाह असफल होगा।

4 शेष लग्नों में विभिन्न भावों मे सप्तमेश की स्थिति से मिश्रित फल प्राप्त हुए हैं।

सारिणी –3

लग्न	भाव	सप्तमेश की स्थिति	लग्नेश की स्थिति
मेष	शुभ	10, 7, 8	2, 6, 12
	अशुभ	5, 4, 11	8, 3, 4
वृष	शुभ	11, 1, 4	3, 5, 8
	अशुभ	5, 6, 10	6, 9, 4
मिथुन	शुभ	12, 5, 2	8, 5, 6
	अशुभ	8, 9, 7	7, 10, 11
कर्क	शुभ	12, 1, 9	8, 5, 6
	अशुभ	5, 4, 3	7, 10, 11
सिंह	शुभ	12, 9, 11	11, 9, 3
	अशुभ	4, 2, 3	5, 2, 7
कन्या	शुभ	12, 1, 9	1, 2, 9
	अशुभ	3, 5, 6	11, 3, 4
तुला	शुभ	7, 4, 11	9, 6, 2
	अशुभ	2, 5, 10	11, 7, 10
वृशचिक	शुभ	9, 12, 6	5, 7, 11
	अशुभ	8, 5, 4	6, 4, 12
धनु	शुभ	8, 1, 4	5, 4, 7
	अशुभ	5, 9, 11	1, 11, 12
मकर	शुभ	10, 1, 3	8, 3, 4
	अशुभ	6, 9, 2	10, 9, 11
कुम्भ	शुभ	2, 12, 7	1, 5, 2
	अशुभ	9, 8, 1	9, 8, 10
मीन	शुभ	9, 12, 2	1, 7, 8
	अशुभ	6, 5, 7	9, 10, 11

सभी विवाहों में सप्तमेश व लग्नेश की स्थिति

हमनें दो तरह से सफल–असफल विवाह की कुंड़लियों में लग्नानुसार अलग–2 सप्तमेश की स्थिति का आंकलन किया। अब हमने सभी 1013 कुंड़लियों का एक साथ फल जानने के उदेश्य से सप्तमेश, लग्नेश तथा पंचमेश की स्थितियों का निरीक्षण किया तो भी परिणाम उपरोक्त प्रकार से ही प्राप्त हुए। इन्हे एक दुष्टि में देखते हैं।

सप्तमेश को शुभाशुभ फल

1 सभी लग्नों में सप्तमेश 10 दु:स्थानों पर स्थित होकर शुभ फल दे रहा है। जो कि 27.77% हुआ। क्योंकि प्रत्येक लग्न के तीन भावों को हमने लिया है अर्थात 12 ÷ 3 = 36 10 ÷ 36×100 = 27.77%

2 सभी लग्नों में सप्तमेश शुभ स्थानों पर बैठकर अशुभ फल दे रहा है। हमने यहां शुभ स्थान केवल केन्द्र तथा त्रिकोण को ही लिया है। 58.33% मामलों में शुभ स्थान पर स्थित होकर सप्तमेश ने अशुभ फल दिए।

लग्नेश का शुभाशुभ फल

3 सभी लग्नों में लग्नेश 9 स्थानों में स्थित होकर शुभ फल दिया है अशुभ स्थानों में हमनें 6, 8, 12 को लिया है। लग्नेश ने अशुभ स्थानों पर बैठकर 25.00% मामलों मे शुभ फल दिया है।

4 सभी लग्नों में लग्नेश ने 20 शुभ स्थानों पर बैठकर अशुभ फल दिया है जो कि 55.55% है।

सारिणी – 4

सफल विवाहों में मंगलीक दोष

1, 2, 4, 7, 8, 12 भावों में

लग्न	1	2	4	7	8	12	कुल प्रतिशत
मेष	7%	16%	4%	3%	4%	11%	45%
वृष	9%	9%	9%	12%	8%	01%	48%
मिथुन	9%	6%	13%	9%	12%	4%	53%
कर्क	4%	4%	11%	11%	4%	13%	47%
सिंह	16%	8%	4%	7%	9%	7%	51%
कन्या	8%	4%	10%	3%	8%	5%	38%
तुला	11%	7%	14%	9%	2%	6%	49%
वृश्चिक	5%	10%	5%	12%	5%	10%	47%
धनु	7%	16%	4%	13%	4%	8%	52%
मकर	9%	3%	7%	14%	4%	7%	49%
कुंभ	9%	9%	3%	9%	12%	9%	51%
मीन	7%	7%	11%	3%	7%	7%	42%
							567 ÷ 12 = 47.25 %

सफल विवाहों में मांगलीक दोष

शास्त्रों के अनुसार 1, 2, 4, 7, 8, 12 भावों में मंगल होने से मांगलीक दोष होता है। चाहे वह मंगल लग्न, चन्द्र या शुक्र से उपरोक्त भावों में से कही भी हो। पति–पत्नी दोनों मे से एक मांगलीक तथा दूसरा गैर मांगलीक होगा तो विवाह असफल होगा। पूर्व पृष्ठों मे मंगल के बहुत प्रकार के परिहार बताए गए तथा बहुत सी जन्मपत्रियों के सर्वेक्षण से मंगल जुड़ी धारणाओं की आधार हीन पाया। अभी हमने 1013 जातकों की कुंड़लियां एकत्र करके उन्हें दो भागों मे बांटा 1 सफल 2 असफल

सफल विवाह की श्रेणी में 552 तथा असफल विवाह की श्रेणी में 462 जातकों को दाम्पत्य जीवन पर मंगल का शुभाशुभ फल जानने के प्रयास किया। पहले हमने सफल विवाह के जातकों की जन्म पत्रियों में 1, 2, 4, 7, 8, 12 भाव के फलों का सभी बारह लग्नों में अलग–2 विवेचन किया तो पाया कि संबधित भावों में बैठकर मंगल ने किसी लग्न में 42% तो किसी लग्न में 53% तक शुभ फल दिए। क्योंकि ये सभी जातक मांगलीक नही है फिर भी फल लगभग 47% शुभ फल रहे।

इसी प्रकार हमनें असफल विवाह वाले जातकों की कुंड़लियों में लग्न अनुसार मंगल के दुष्प्रभाव को जानने को प्रयास कियां यहां भी मंगल का असर लगभग 43% रहा। अर्थात् इस प्रकार से मंगल के प्रति धारणाऐ ध्वस्त होती दिखाई दी। सफल या असफल विवाह के लिए मंगल को दोष कारी कहना न्याय संगत नही होगा। दोनों प्रकार के जातकों पर मंगल का जो अध्ययन किया गया उन्हे दो अलग–2 चार्टो के माध्यम से दर्शानें का प्रयास किया गया है।

सारिणी –5
असफल विवाह में मांगलीक दोष
1, 2, 4, 7, 8, 12

लग्न	1	2	4	7	8	12	कुल प्रतिशत
मेष	4%	4%	11%	4%	22%	0%	45%
वृष	0%	9%	2%	7%	9%	4%	31%
मिथुन	4%	2%	4%	13%	0%	8%	31%
कर्क	3%	3%	16%	3%	5%	7%	40%
थ्संह	7%	10%	2%	7%	12%	8%	46%
कन्या	16%	9%	12%	7%	5%	7%	56%
तुला	6%	13%	7%	2%	2%	8%	38%
वृश्चिक	7%	7%	12%	5%	5%	15%	57%
धनु	12%	7%	2%	4%	13%	4%	42%
मकर	0%	8%	0%	17%	21%	0%	46%
कुंभ	3%	7%	7%	3%	13%	7%	40%
मीन	0%	14%	5%	5%	33%	0%	57%
523 ÷ 12 = 43.58 %							

सारिणि –6

शोध निष्कर्ष

	शुभ फल				अशुभ फल		
	सफल विवाह के मुख्य भाव				असफल विवाह के मुख्य भाव		
	लग्न	सप्तमेश	लग्नेश	मंगल	सप्तमेश	लग्नेश	मंगल
1	मेष	10,7,8	2,6,12	2,12,1	5,4,11	8,3,4	8,4,1
2	वृष	11,1,4	3,5,8	7,4,1	5,6,10	6,9,4	8,2,7
3	मिथुन	12,5,2	8,5,6	4,8,7	8,9,7	7,10,11	7,12,1
4	कर्क	12,1,9	8,5,6	12,7,4	5,4,3	7,10,11	4,12,8
5	सिंह	12,9,11	11,9,3	1,8,2	4,2,3	5,2,7	8,2,12
6	कन्या	12,1,9	1,2,9	4,8,1	3,5,6	11,3,4	4,1,2
7	तुला	7,4,11	9,6,2	4,1,7	2,5,10	11,7,10	2,12,4
8	वृश्चिक	9,12,6	5,7,11	7,12,2	8,5,4	6,4,12	12,4,1
9	धनु	8,1,4	5,4,7	2,7,12	5,9,11	1,11,12	8,1,2
10	मकर	10,1,3	2,3,4	7,1,12	6,9,2	10,9,11	8,7,2
11	कुम्भ	2,12,7	1,5,2	8,12,1	9,8,1	9,8,10	8,12,4
12	मीन	9,12,2	1,7,8	4,8,12	6,5,7	9,10,11	8,2,7

सफल विवाह

1. मिथुन , कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, कुम्भ व मीन लग्नों में सप्तमेश की 12 वें भाव में स्थिति शुभ फल कारक रही।
2. मेष व मकर लग्नो में ही सप्तमेश की दशम भाव में स्थिति के शुभ फल मिले।
3. तुला, मेष व कुम्म लग्नों में ही सप्तमेश ने सप्तम भाव में स्थित होकर वैवाहिक सुख में वृद्धि की।
4. मिथुन, कर्क, मकर लग्नों में लग्नेश ने अष्टम भाव में होकर दाम्पत्य सुख दिया।
5. वृश्चिक, धनु, वृष, मिथुन, कर्क तथा कुम्म लग्नों में लग्नेश ने पंचम भाव में स्थित होकर शुभ फल किये।
6. मिथुन, कर्क व मकर लग्नों में लग्नेश ने अष्टम भाव में स्थित होकर दाम्पत्य सुख की वृद्धि की।

असफल विवाह

1. मेष, वृष, कर्क, धनु लग्नों में मुख्य रूप से तथा कन्या, तुला, वृश्चिक व मीन लग्नों में गौण रूप से स सप्तमेश की पंचम भाव में स्थिति वैवाहिक सुख में बाधक बनी।
2. मिथुन, वृश्चिक व कुम्म लग्नों मे सप्तमेश अष्टम भाव स्थित होकर वैवाहिक सुख में हानि कारक सिद्ध हुआ।
3. मकर, मीन व वुष लग्नों में सप्तमेश की षष्ठ भाव में स्थिति अशुभ रही।
4. मिथुन, कर्क व तुला लग्नों में लग्नेश ने सप्तम भाव में स्थित होकर अशुभ फल प्रदान किये।
5. कन्या, तुला व धनु लग्नों में लग्नेश ने एकादश भाव में स्थित होकर विवाह होकर विवाह सुख की हानि की।

6. कुम्भ, मीन व वृष लग्नों में लग्नेश की नवम् भाव में स्थिति अशुभ रही।

मंगलीक दोष

1. सफल विवाहों में वृष, वृश्चिक, मकर लग्नों में सप्तम भाव का मंगल शुभ किन्तु मिथुन लग्न में अशुभ रहा।
2. मिथुन, कन्या, तुला व मीन लग्नों में चतुर्थ भाव का मंगल शुभ किन्तु कर्क तथा कन्या लग्नों में अशुभ रहा। यहाँ कन्या लग्न में शुभ व अशुभ दोनो प्रकार की स्थिति रही।
3. असफल विवाहों में मेष, वृष, सिंह, धनु, मकर, कुम्भ व मीन लग्नों में मंगल की अष्टम भाव में स्थिति विशेष रूप में अशुभ फलकारी सिद्ध हुई।
4. सफल विवाहों में लगभग 47 कुंड़लियों में तथा असफल विवाहों में लगभग 44 कुड़लियों में मंगलीक दोष मिला। अतः मंगलीक दोष की वैवाहिक सुख में कोई भुमिका सिद्ध नहीं हुई।